हिन्दी

12.8.20

बी० ए० V सेमेस्टर III Paper
हिन्दी तथा अन्य गद्य विधाएँ

निबन्ध गद्य साहित्य की एक विधा है।
डॉ० वार्ष्णेय के शब्दों में-
"निबन्ध रचना केवल खड़ी बोली की विशेषता है। खड़ी बोली गद्य के लिए उन्नीसवीं शताब्दी और उसमें भी निबन्ध रचना की दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से निबन्ध हिन्दी साहित्य का नितान्त आधुनिक रूप है।"

→ "जिस ग्रन्थ में एक ही विषय के प्रतिपादनार्थ अनेक व्याख्याएँ संग्रहित होती हैं उसे निबन्ध कहते हैं।"

→ लार्ड बेकन ने (1561-1626) ने निबन्ध को 'डिस्पर्स्ड मेडिटेशन' कहा (बिखरावयुक्त चिंतन)

→ "
The true essay is essentially personal. It belongs to the literature of self-expression. Treatise and dissertation may be objective, the essay is subjective.'—
— W. H. Hudson

→ उन्नीसवीं शती के युग में रोमांटिक पुनरुत्थान के कारण लेखकों के व्यक्तित्व पर अधिक बल दिया गया। इसका प्रभाव निबन्ध के क्षेत्र पर भी पड़ा। फलस्वरूप इस युग के दो प्रमुख निबन्धकारों में विलियम हैजलिट और चार्ल्स लैम्ब ने निबन्ध रचना में आत्माभिव्यक्ति को महत्व दिया।

→ विक्टोरिया युग में निबन्धों में पुनः परिवर्तन लक्षित हुआ। मैकॉले, कार्लाइल, रस्किन, मैथ्यू आर्नाल्ड ने विचारात्मक साहित्यिक निबन्धों की रचना की

→ हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग के निबन्धकारों में आत्मव्यंजकता का तत्त्व लक्षित होता है।

→ द्विवेदी युग में भाषा की प्रौढ़ता के साथ विचारों में गम्भीरता आ गई।

निबन्ध के तत्वों के आधार पर निबन्ध के निम्न गुण स्पष्ट होते हैं-

- निबन्ध गद्य की आधुनिक विधा है।
- आत्माभिव्यंजना निबन्ध की मूलभूत विशेषता है

- हास्य व्यंग्य और विनोद की प्रधानता
- सजीवता होनी चाहिए
- सरसता तथा स्वच्छन्दता होनी चाहिए।
- निबन्ध में सूक्ष्म निरीक्षण की क्षमता होनी चाहिए